बॉक्स जेलीफिश *(Box Jellyfish)*

मन्नार की खाड़ी और पाल्क खाड़ी में बॉक्स जेलीफ़िश के वितरण की सीमा पर अध्ययन किया जा रहा है।आम तौर पर बॉक्स जेलीफ़िश अत्यधिक विषैले होते हैं और जीवन को खतरनाक स्थिति का कारण बन सकते हैं।बॉक्स जेलीफ़िश का डंक गंभीर पीठ दर्द, मांसपेशी ऐंठन और मतली होने काकारण बनताहै।इन जेलीफ़िशों को आम तौर पर तमिल नाडु के मन्नार की खाड़ी और पाल्क खाड़ी क्षेत्रों में नालू मुलै सोरि, कुत्तु सोरि और कुवालाई सोरि कहा जाता है। बॉक्स जेलीफ़िश के घाव के लिए अस्पताल में इलाज की जरूरत है।

सामान्य प्राथमिक चिकित्सा

क्राइसोरा *(Chrysaora sp.)*, लोबोनीमा *(Lobonema sp.)*, रोपिलेमा *(Rhopilema Sp.)* और सयानिया *(Cyanea sp.)* प्रजातियाँ जीवन की धमकी देने वाली स्थिति का कारण नहीं बनती हैं और दर्द आमतौर पर किराने की दुकानों में उपलब्धसिरका से कम किया जा सकता है।

फाइसलिया प्रजाति *(Physalia sp.)* के घाव के लिए सिरका का कभी भी उपयोग न करें।

जेलीफ़िश घाव के किसी भी प्रकार के लिए ताजे पानी या ऐस-क्यूबका कभी भी उपयोग न करें।

बॉक्स जेलीफ़िश के घाव के लिए अस्पताल में तुरन्त चिकित्सा देने की आवश्यकता है।

जेलीफिश अधिक मात्रा में पाए जानेवाले क्षेत्र

तैयारी:
डॉ. आर. शरवणन. डॉ. एल. रंजित,
डॉ. पी. लक्ष्मीलता, डॉ. ए.के. अब्दुल नाज़र,
डॉ. के.के. जोषी और श्री आई. सय्यद सादिक ।
हिन्दी अनुवाद
श्रीमती प्रिया के.एम.

प्रकाशन
डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक,
भाकृअनुप-सी एम एफ आर आइ,
डाक संख्या 1603, कोच्ची- 682 018 केरला, भारत।

CMFRI Pamphlet No. 71/2019

SUBHA 0461-2328163

मन्नार खाड़ी और पाल्क खाड़ी की जेलीफ़िश विविधता और वितरण - जेलीफ़िश डंक के प्राथमिक उपचार के उपाय।

केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान
संस्थान का मण्डपम क्षेत्रीय केन्द्र
मरैन फिशरीस डाकघर
मण्डपम कैंप - 623 520
शमनाथपुरम जिला
www.cmfri.org.in
2019

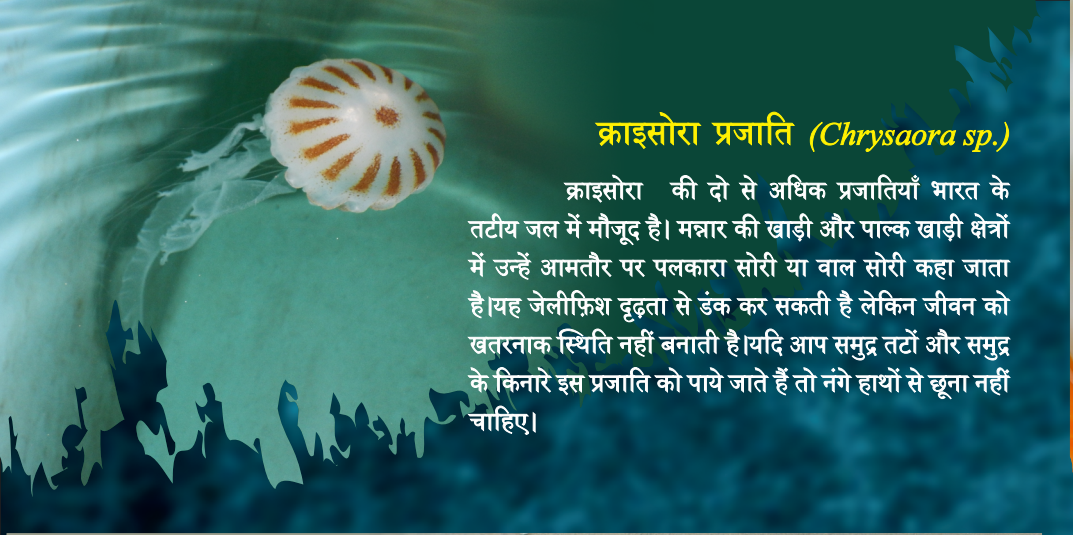

क्राइसोरा प्रजाति *(Chrysaora sp.)*

क्राइसोरा की दो से अधिक प्रजातियाँ भारत के तटीय जल में मौजूद है। मन्नार की खाड़ी और पाल्क खाड़ी क्षेत्रों में उन्हें आमतौर पर पलकारा सोरी या वाल सोरी कहा जाता है।यह जेलीफ़िश दृढ़ता से डंक कर सकती है लेकिन जीवन को खतरनाक स्थिति नहीं बनाती है।यदि आप समुद्र तटों और समुद्र के किनारे इस प्रजाति को पाये जाते हैं तो नंगे हाथों से छूना नहीं चाहिए।

क्राम्बियोनेल्ला प्रजाति *(Crambionella sp.)*

इस जेलीफ़िश की तीन प्रजातियां भारत के तटीय समुद्र में फैली गयी हैं।ये जेलीफ़िश डंक नहीं करती हैं, इसलिए इन्हें संभालना सुरक्षित हैं।ये जेलीफ़िश दक्षिण पूर्व एशियाई देशों और चीन में खाद्य हैं। भारत चीन को खाद्य योग्य जेलीफिश का निर्यात करने वाले प्रमुख देशों में एक है।

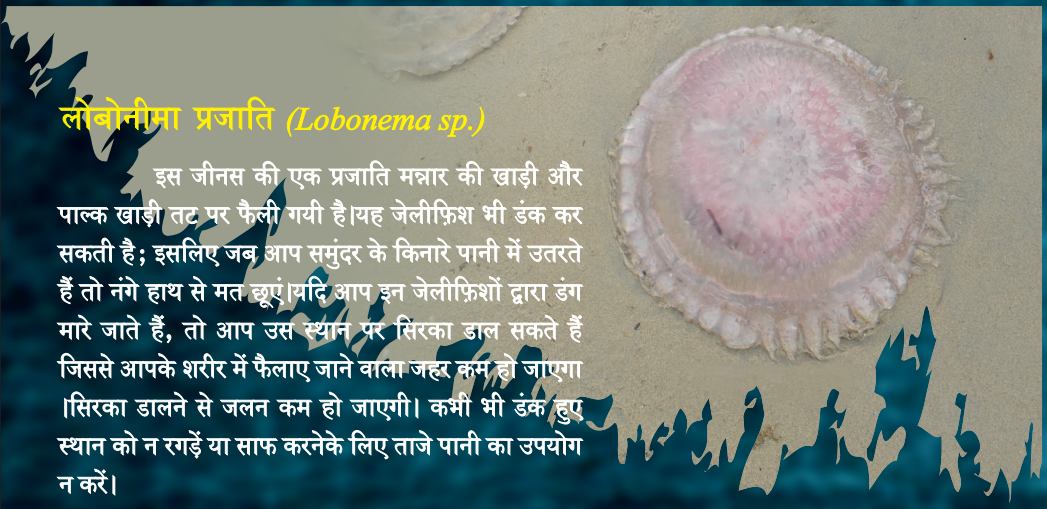

लोबोनीमा प्रजाति *(Lobonema sp.)*

इस जीनस की एक प्रजाति मन्नार की खाड़ी और पाल्क खाड़ी तट पर फैली गयी है।यह जेलीफ़िश भी डंक कर सकती है; इसलिए जब आप समुंदर के किनारे पानी में उतरते हैं तो नंगे हाथ से मत छूएं।यदि आप इन जेलीफ़िशों द्वारा डंग मारे जाते हैं, तो आप उस स्थान पर सिरका डाल सकते हैं जिससे आपके शरीर में फैलाए जाने वाला जहर कम हो जाएगा ।सिरका डालने से जलन कम हो जाएगी। कभी भी डंक हुए स्थान को न रगड़ें या साफ करनेके लिए ताजे पानी का उपयोग न करें।

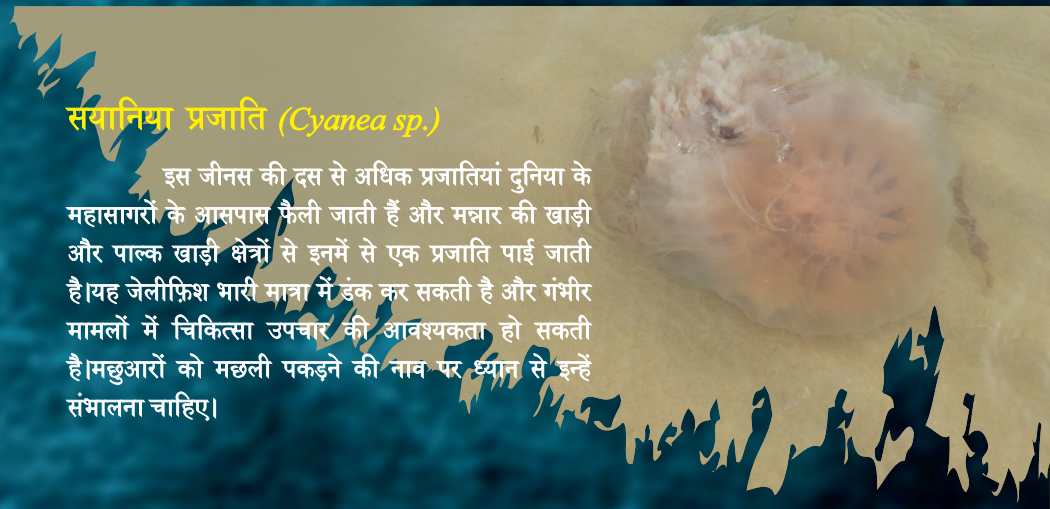

सयानिया प्रजाति *(Cyanea sp.)*

इस जीनस की दस से अधिक प्रजातियां दुनिया के महासागरों के आसपास फैली जाती हैं और मन्नार की खाड़ी और पाल्क खाड़ी क्षेत्रों से इनमें से एक प्रजाति पाई जाती है।यह जेलीफ़िश भारी मात्रा में डंक कर सकती है और गंभीर मामलों में चिकित्सा उपचार की आवश्यकता हो सकती है।मछुआरों को मछली पकड़ने की नाव पर ध्यान से इन्हें संभालना चाहिए।

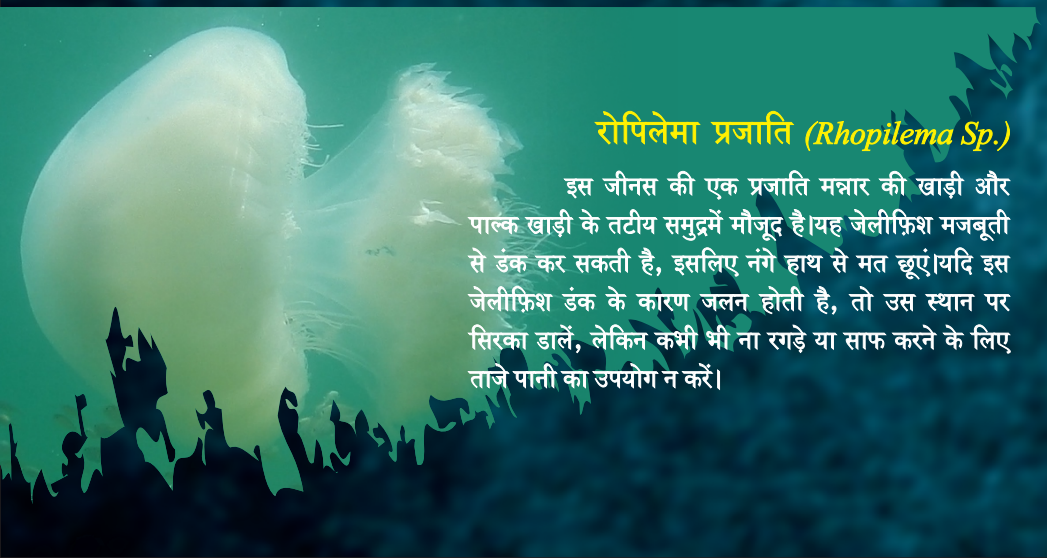

रोपिलेमा प्रजाति *(Rhopilema Sp.)*

इस जीनस की एक प्रजाति मन्नार की खाड़ी और पाल्क खाड़ी के तटीय समुद्रमें मौजूद है।यह जेलीफ़िश मजबूती से डंक कर सकती है, इसलिए नंगे हाथ से मत छूएं।यदि इस जेलीफ़िश डंक के कारण जलन होती है, तो उस स्थान पर सिरका डालें, लेकिन कभी भी ना रगड़े या साफ करने के लिए ताजे पानी का उपयोग न करें।

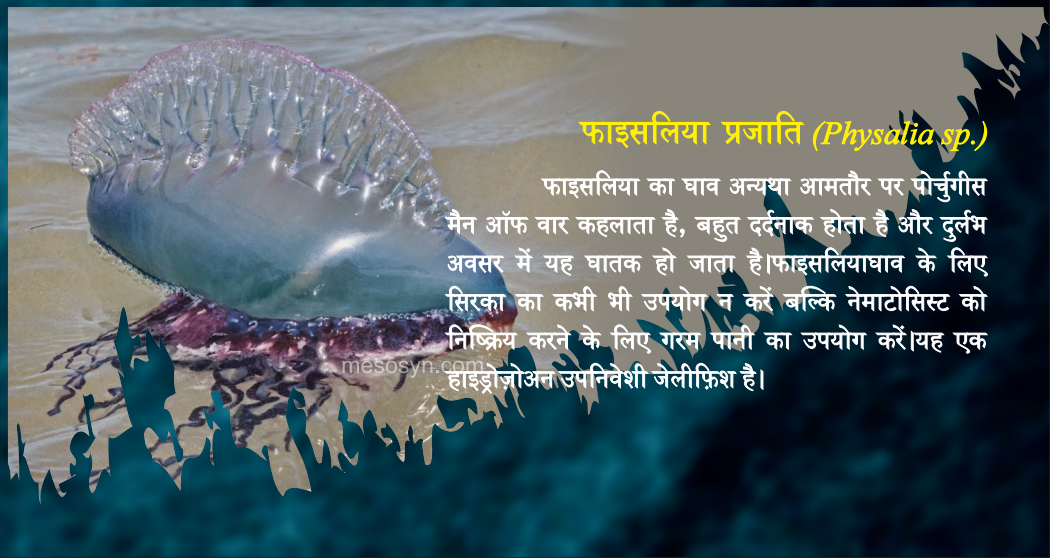

फाइसलिया प्रजाति *(Physalia sp.)*

फाइसलिया का घाव अन्यथा आमतौर पर पोर्चुगीस मैन ऑफ वार कहलाता है, बहुत दर्दनाक होता है और दुर्लभ अवसर में यह घातक हो जाता है।फाइसलियाघाव के लिए सिरका का कभी भी उपयोग न करें बल्कि नेमाटोसिस्ट को निष्क्रिय करने के लिए गरम पानी का उपयोग करें।यह एक हाइड्रोज़ोअन उपनिवेशी जेलीफ़िश है।

mesosyn.com